अध्याय २

वन एवं वन्य जीव संसाधन

सम्पूर्ण प्रश्न बैंक

३० बहुविकल्पीय प्रश्न | २० रिक्त स्थान भरो | १० सुमेलन | १० अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न | ३० लघु उत्तर | १० दीर्घ उत्तर

१००% प्राकृतिक शिक्षक भाषा | हिन्दी माध्यम | सरल अर्थ

शिक्षक की सलाह: बच्चो, यह अध्याय २ का सम्पूर्ण अभ्यास सेट है। हर खण्ड को ध्यान से पढ़ो। उत्तर ठीक वैसे लिखे हैं जैसे एक अच्छा शिक्षक समझाता है — सरल, स्पष्ट और याद रखने योग्य। परीक्षा में शुभकामनाएँ!

खण्ड १ — बहुविकल्पीय प्रश्न () — ३० प्रश्न

शिक्षक की सलाह: उत्तर देने से पहले हर विकल्प ध्यान से पढ़ो। गलत विकल्प जानबूझकर लुभावने बनाए गए हैं — सोचकर उत्तर दो!

प्र.1. भारतीय वन्य जीव (संरक्षण) अधिनियम किस वर्ष पारित हुआ?

(क) 1960

(ख) 1972

(ग) 1980

(घ) 1991

उत्तर: (ख) 1972 — 1972 — यह ऐतिहासिक कानून वन्य जीवों के शिकार पर रोक, संरक्षित प्रजातियों की सूची और राष्ट्रीय उद्यानों की स्थापना के लिए बना।

प्र.2. प्रोजेक्ट टाइगर किस वर्ष शुरू हुआ?

(क) 1970

(ख) 1975

(ग) 1973

(घ) 1980

उत्तर: (ग) 1973 — 1973 — बाघों की संख्या 55,000 से घटकर मात्र 1,827 रह जाने पर यह अभियान शुरू किया गया।

प्र.3. भारत में वनों की कौन सी श्रेणी नहीं है?

(क) आरक्षित वन

(ख) संरक्षित वन

(ग) वर्गीकृत वन

(घ) अवर्गीकृत वन

उत्तर: (ग) वर्गीकृत वन — "वर्गीकृत वन" कोई श्रेणी नहीं है। तीन वास्तविक श्रेणियाँ हैं — आरक्षित, संरक्षित और अवर्गीकृत।

प्र.4. भारत की कुल वन भूमि का आधे से अधिक भाग किस श्रेणी में आता है?

(क) संरक्षित वन

(ख) अवर्गीकृत वन

(ग) आरक्षित वन

(घ) सामुदायिक वन

उत्तर: (ग) आरक्षित वन — आरक्षित वन — ये भारत की 50% से अधिक वन भूमि को कवर करते हैं और सर्वाधिक संरक्षित श्रेणी हैं।

प्र.5. आरक्षित वनों के अंतर्गत सर्वाधिक क्षेत्रफल किस राज्य में है?

(क) राजस्थान

(ख) उत्तराखण्ड

(ग) केरल

(घ) मध्य प्रदेश

उत्तर: (घ) मध्य प्रदेश — मध्य प्रदेश — इसकी कुल वन भूमि का 75% आरक्षित वनों के अंतर्गत है, जो सभी राज्यों में सर्वाधिक है।

प्र.6. चिपको आन्दोलन मुख्यतः किस मुद्दे से जुड़ा था?

(क) जल संरक्षण

(ख) वनों की कटाई रोकना

(ग) वन्य जीव शिकार

(घ) मृदा अपरदन

उत्तर: (ख) वनों की कटाई रोकना — चिपको आन्दोलन — जहाँ लोगों ने पेड़ों को गले लगाकर उन्हें कटने से बचाया — हिमालय क्षेत्र में वनों की कटाई रोकने में सफल रहा।

प्र.7. का पूरा नाम क्या है?

(क) संयुक्त वन प्रबंधन

(ख) जंगल वन मिशन

(ग) संयुक्त वन निगरानी

(घ) कनिष्ठ वन प्रबंधन

उत्तर: (क) संयुक्त वन प्रबंधन — संयुक्त वन प्रबंधन ( ) — इसमें स्थानीय समुदाय और वन विभाग मिलकर वनों का प्रबंधन करते हैं।

प्र.8. किस वर्ष से औपचारिक रूप से लागू है?

(क) 1980

(ख) 1992

(ग) 1988

(घ) 2000

उत्तर: (ग) 1988 — 1988 — ओडिशा ने के लिए पहला प्रस्ताव पारित किया, इस प्रकार यह कार्यक्रम औपचारिक रूप से शुरू हुआ।

प्र.9. कौन-सी संरक्षण रणनीति में समुदाय की सीधी भागीदारी नहीं है?

(क)

(ख) चिपको आन्दोलन

(ग) बीज बचाओ आन्दोलन

(घ) वन्यजीव अभयारण्यों का सीमांकन

उत्तर: (घ) वन्यजीव अभयारण्यों का सीमांकन — अभयारण्यों की सीमाएँ सरकार निर्धारित करती है — इसमें समुदाय की प्रत्यक्ष भागीदारी नहीं होती।

प्र.10. 1973 तक भारत में बाघों की संख्या कितनी रह गई थी?

(क) 500

(ख) 1,827

(ग) 3,000

(घ) 10,000

उत्तर: (ख) 1,827 — शताब्दी के आरम्भ में अनुमानित 55,000 बाघों से घटकर 1973 तक मात्र 1,827 रह गए — एक भयावह गिरावट।

प्र.11. पवित्र वन ( ) को स्थानीय रूप से क्या कहते हैं?

(क) देव वन या देवराई

(ख) जंगल बचाओ

(ग) अरण्य रक्षा

(घ) वन महोत्सव

उत्तर: (क) देव वन या देवराई — पवित्र वन — जिन्हें देव वन, देवराई, सरना आदि नामों से जाना जाता है — समुदाय द्वारा पूर्णतः अछूते छोड़े जाते हैं।

प्र.12. गुजरात के किस वन में एशियाई शेर पाया जाता है?

(क) कान्हा

(ख) काजीरंगा

(ग) गिर

(घ) बाँधवगढ़

उत्तर: (ग) गिर — गिर वन राष्ट्रीय उद्यान, गुजरात — एशियाई शेर विश्व की सबसे दुर्लभ बड़ी बिल्लियों में से एक है और यहीं पाई जाती है।

प्र.13. बिश्नोई समुदाय मुख्यतः किन जानवरों की रक्षा करता है?

(क) बाघ और तेंदुआ

(ख) काला हिरण, नीलगाय और मोर

(ग) मगरमच्छ और घड़ियाल

(घ) हाथी और गैंडा

उत्तर: (ख) काला हिरण, नीलगाय और मोर — राजस्थान के बिश्नोई इन्हें पवित्र मानते हैं और प्रतिदिन खिलाकर इनकी रक्षा करते हैं।

प्र.14. विश्व के बाघों की आबादी का लगभग दो-तिहाई भाग किन दो देशों में पाया जाता है?

(क) चीन और रूस

(ख) बांग्लादेश और श्रीलंका

(ग) भारत और नेपाल

(घ) भारत और चीन

उत्तर: (ग) भारत और नेपाल — भारत और नेपाल मिलकर विश्व के जीवित बाघों का लगभग दो-तिहाई हिस्सा आश्रय देते हैं।

प्र.15. बीज बचाओ आन्दोलन किस क्षेत्र में हुआ?

(क) राजस्थान

(ख) असम

(ग) टिहरी और नवदान्या

(घ) पंजाब

उत्तर: (ग) टिहरी और नवदान्या — उत्तराखण्ड के टिहरी और नवदान्या में — इस आन्दोलन ने पारंपरिक बीजों को जीवित रखा और रासायनिक खेती का विकल्प दिखाया।

प्र.16. वन पारिस्थितिकी तंत्र में "कीस्टोन प्रजाति" कौन है?

(क) मोर

(ख) बाघ

(ग) गौरेया

(घ) खरगोश

उत्तर: (ख) बाघ — बाघ — खाद्य श्रृंखला के शीर्ष पर बैठकर यह पूरे पारिस्थितिकी तंत्र को स्वस्थ बनाए रखता है।

प्र.17. गोडावण किसका स्थानीय नाम है?

(क) चिंकारा

(ख) हंगुल

(ग) ग्रेट इंडियन बस्टर्ड

(घ) नीलगाय

उत्तर: (ग) ग्रेट इंडियन बस्टर्ड — ग्रेट इंडियन बस्टर्ड ( ) को गोडावण कहते हैं। यह गंभीर रूप से संकटग्रस्त है और मुख्यतः राजस्थान में पाया जाता है।

प्र.18. बाघों के लिए निम्नलिखित में से कौन-सा खतरा है?

(क) व्यापार के लिए शिकार

(ख) सिकुड़ता आवास

(ग) पारंपरिक दवाइयों में उपयोग

(घ) उपरोक्त सभी

उत्तर: (घ) उपरोक्त सभी — बाघों पर एक साथ अनेक खतरे हैं — शिकार, आवास हानि, शिकार-आधार में कमी, जनसंख्या वृद्धि और औषधीय माँग।

प्र.19. संरक्षण की दृष्टि से सर्वाधिक मूल्यवान वन श्रेणी कौन-सी है?

(क) संरक्षित वन

(ख) अवर्गीकृत वन

(ग) आरक्षित वन

(घ) सामुदायिक वन

उत्तर: (ग) आरक्षित वन — आरक्षित वन — ये सबसे सख्त संरक्षण के अंतर्गत हैं और वनों तथा वन्य जीवों के संरक्षण के लिए सर्वाधिक मूल्यवान माने जाते हैं।

प्र.20. भारत की कुल वन भूमि का लगभग एक-तिहाई किस श्रेणी में आता है?

(क) आरक्षित वन

(ख) संरक्षित वन

(ग) अवर्गीकृत वन

(घ) सामुदायिक वन

उत्तर: (ख) संरक्षित वन — संरक्षित वन — वन विभाग द्वारा घोषित ये वन किसी भी और क्षरण से सुरक्षित हैं।

प्र.21. भारत किस क्षेत्र में विश्व के सबसे समृद्ध देशों में से एक है?

(क) केवल खनिज संसाधन

(ख) जैव विविधिता

(ग) केवल जल संसाधन

(घ) जीवाश्म ईंधन

उत्तर: (ख) जैव विविधिता — जैव विविधिता — भारत में पौधों और जानवरों की अत्यंत विशाल विविधिता है, जो अभी भी पूरी तरह खोजी नहीं गई है।

प्र.22. राजस्थान के अलवर जिले के पाँच गाँवों ने 1,200 हेक्टेयर जंगल को क्या घोषित किया?

(क) सरकारी वन

(ख) खनन क्षेत्र

(ग) भैरोंदेव डाकव सोंचुरी

(घ) आरक्षित वन

उत्तर: (ग) भैरोंदेव डाकव सोंचुरी — इन्होंने अपने नियम बनाए, शिकार पर पाबंदी लगाई और बाहरी हस्तक्षेप को रोका — एक शानदार सामुदायिक संरक्षण का उदाहरण।

प्र.23. छोटा नागपुर के मुंडा और संथाल किन पेड़ों को पवित्र मानते हैं?

(क) नीम और तुलसी

(ख) महुआ और कदम्ब

(ग) पीपल और बरगद

(घ) आम और इमली

उत्तर: (ख) महुआ और कदम्ब — महुआ ( ) और कदम्ब ( ) — इन्हें पीढ़ियों से पवित्र मानकर संरक्षित किया गया है।

प्र.24. अवर्गीकृत वन किसके हो सकते हैं?

(क) केवल केंद्र सरकार के

(ख) केवल राज्य सरकारों के

(ग) सरकार, निजी व्यक्तियों और समुदायों दोनों के

(घ) केवल जनजातीय समुदायों के

उत्तर: (ग) सरकार, निजी व्यक्तियों और समुदायों दोनों के — आरक्षित या संरक्षित वनों के विपरीत, अवर्गीकृत वन सरकार, निजी व्यक्तियों या समुदायों — किसी के भी हो सकते हैं।

प्र.25. वनों का संरक्षण हमारी "जीवन-पोषण प्रणाली" को बचाता है, जिसमें शामिल हैं:

(क) कोयला और पेट्रोलियम

(ख) जल, वायु और मृदा

(ग) सोना और चाँदी

(घ) सड़कें और भवन

उत्तर: (ख) जल, वायु और मृदा — वन स्वच्छ जल, स्वच्छ वायु और उपजाऊ मृदा — तीनों मूलभूत जीवन-पोषण प्रणालियों को बनाए रखते हैं।

प्र.26. किस दशक में संरक्षणवादियों ने भारत में राष्ट्रीय वन्य जीव सुरक्षा कार्यक्रम की माँग की?

(क) 1940 और 1950 का दशक

(ख) 1980 और 1990 का दशक

(ग) 1960 और 1970 का दशक

(घ) 2000 का दशक

उत्तर: (ग) 1960 और 1970 का दशक — इस दौरान वन्य जीवों की तेज़ी से घटती संख्या की चिंता ने 1972 के ऐतिहासिक अधिनियम को जन्म दिया।

प्र.27. निम्नलिखित में से कौन मुख्यतः बाघ आरक्षित क्षेत्र नहीं है?

(क) कॉर्बेट राष्ट्रीय उद्यान

(ख) पेरियार बाघ आरक्षित

(ग) काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान

(घ) सरिस्का वन्यजीव अभयारण्य

उत्तर: (ग) काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान — काजीरंगा एक सींग वाले गैंडे के लिए प्रसिद्ध है। अन्य तीनों प्रोजेक्ट टाइगर के अंतर्गत आधिकारिक बाघ आरक्षित क्षेत्र हैं।

प्र.28. मत्स्य उद्योग मुख्यतः किसके रखरखाव पर निर्भर करता है?

(क) मरुस्थलीय पारिस्थितिकी तंत्र

(ख) जलीय जैव विविधता

(ग) पर्वतीय हिमनद

(घ) कृषि भूमि

उत्तर: (ख) जलीय जैव विविधता — मछलियाँ और जलीय जीव विविध जल पारिस्थितिकी तंत्र पर निर्भर हैं। वन नदी और नाले की गुणवत्ता बनाए रखने में सहायक होते हैं।

प्र.29. के लिए पहला प्रस्ताव किस राज्य ने पारित किया?

(क) राजस्थान

(ख) मध्य प्रदेश

(ग) ओडिशा

(घ) केरल

उत्तर: (ग) ओडिशा — ओडिशा ने 1988 में के लिए पहला राज्य प्रस्ताव पारित किया और इस ऐतिहासिक कार्यक्रम की नींव रखी।

प्र.30. जैव विविधता का सबसे उचित विवरण कौन-सा है?

(क) किसी क्षेत्र में केवल पौधों की प्रजातियों की विविधता

(ख) किसी क्षेत्र में सभी पौधों, जानवरों और सूक्ष्म-जीवों की विविधता

(ग) किसी वन में पेड़ों की कुल संख्या

(घ) भारत में पक्षी प्रजातियों की संख्या

उत्तर: (ख) किसी क्षेत्र में सभी पौधों, जानवरों और सूक्ष्म-जीवों की विविधता — जैव विविधता = किसी क्षेत्र में पाए जाने वाले सभी जीवित प्राणियों — पौधों, जानवरों, जीवाणुओं और सूक्ष्म-जीवों — की विविधता।

खण्ड २ — रिक्त स्थान भरो — २० प्रश्न

शिक्षक की सलाह: उत्तर आमतौर पर कोई विशेष वर्ष, नाम, संख्या या मुख्य शब्द होता है। पहले पूरा वाक्य पढ़ो, फिर उत्तर भरो।

प्र.1. भारत _____ विविधता के मामले में विश्व के सबसे समृद्ध देशों में से एक है।

उत्तर: जैविक ()

प्र.2. भारतीय वन्य जीव (संरक्षण) अधिनियम वर्ष _____ में लागू हुआ।

उत्तर: 1972

प्र.3. प्रोजेक्ट टाइगर _____ में शुरू हुआ।

उत्तर: 1973

प्र.4. 1973 तक भारत में बाघों की संख्या घटकर _____ रह गई थी।

उत्तर: 1,827

प्र.5. शताब्दी के आरम्भ में बाघों की अनुमानित संख्या _____ थी।

उत्तर: 55,000

प्र.6. भारत की कुल वन भूमि के आधे से अधिक को _____ वन घोषित किया गया है।

उत्तर: आरक्षित

प्र.7. भारत की कुल वन भूमि का लगभग एक-तिहाई _____ वनों के अंतर्गत है।

उत्तर: संरक्षित

प्र.8. मध्य प्रदेश में आरक्षित वन कुल वन क्षेत्र का _____ प्रतिशत हैं।

उत्तर: 75

प्र.9. संयुक्त वन प्रबंधन () कार्यक्रम _____ से औपचारिक रूप में है।

उत्तर: 1988

प्र.10. के लिए पहला प्रस्ताव _____ राज्य ने पारित किया।

उत्तर: ओडिशा

प्र.11. चिपको आन्दोलन हिमालयी क्षेत्र में _____ रोकने के लिए प्रसिद्ध है।

उत्तर: वनों की कटाई ()

प्र.12. स्थानीय समुदायों द्वारा पूर्णतः अछूते छोड़े गए वन के टुकड़ों को _____ वन कहते हैं।

उत्तर: पवित्र ( )

प्र.13. राजस्थान के _________ जिले के पाँच गाँवों ने 1,200 हेक्टेयर को भैरोंदेव डाकव सोंचुरी घोषित किया।

उत्तर: अलवर

प्र.14. ग्रेट इंडियन बस्टर्ड को स्थानीय रूप से _________ कहते हैं।

उत्तर: गोडावण

प्र.15. एशियाई शेर केवल गुजरात के _________ वन में पाया जाता है।

उत्तर: गिर

प्र.16. _________ और _________ मिलकर विश्व के लगभग दो-तिहाई बाघों को आश्रय देते हैं।

उत्तर: भारत / नेपाल

प्र.17. बीज बचाओ आन्दोलन ने सिद्ध किया कि विविध फसलें _________ रसायनों के बिना उगाई जा सकती हैं।

उत्तर: कृत्रिम ()

प्र.18. जैव विविधिता प्रजातियों की _________ विविधिता को बनाए रखती है।

उत्तर: आनुवंशिक ()

प्र.19. वन संरक्षण हमारी जीवन-पोषण प्रणाली — जल, वायु और _________ — को बचाता है।

उत्तर: मृदा ()

प्र.20. राजस्थान के बिश्नोई समुदाय काले हरिण, _________ और मोर को पवित्र मानते हैं।

उत्तर: नीलगाय

खण्ड ३ — सुमेलन — १० जोड़े

शिक्षक की सलाह: स्तम्भ की प्रत्येक प्रविष्टि को स्तम्भ के सही विवरण से मिलाओ। उत्तर तालिका के नीचे दिए गए हैं।

निर्देश: स्तम्भ का स्तम्भ से सुमेलन कीजिए।

स्तम्भ	स्तम्भ
(1) आरक्षित वन	() वन और वन्य जीव संसाधनों के संरक्षण के लिए सर्वाधिक मूल्यवान वन
(2) संरक्षित वन	() वन विभाग द्वारा घोषित — आगे किसी क्षरण से सुरक्षित
(3) अवर्गीकृत वन	() सरकार और निजी व्यक्तियों व समुदायों दोनों के वन और बंजर भूमि
(4) जैव विविधता	() किसी क्षेत्र में पाए जाने वाले सभी पौधों, जानवरों और सूक्ष्म-जीवों की विविधता
(5) पवित्र वन	() समुदाय द्वारा धार्मिक आस्था से पूर्णतः अछूते छोड़े गए वन के टुकड़े
(6)	() 1988 से सरकार और ग्राम समुदायों का वन प्रबंधन में संयुक्त साझेदारी
(7) प्रोजेक्ट टाइगर	() बाघों की संख्या 1,827 रह जाने पर 1973 में शुरू किया गया अभियान
(8) चिपको आन्दोलन	() हिमालय में पेड़ों को गले लगाकर कटाई रोकने का आन्दोलन
(9) बीज बचाओ आन्दोलन	() टिहरी में पारंपरिक बीज और जैविक खेती को बढ़ावा देने का आन्दोलन
(10) कीस्टोन प्रजाति	() जिसकी उपस्थिति पूरे पारिस्थितिकी तंत्र को स्वस्थ बनाए रखती है

उत्तर:

स्तम्भ	सही उत्तर (स्तम्भ)
आरक्षित वन	**वन और वन्य जीव संसाधनों के संरक्षण के लिए सर्वाधिक मूल्यवान वन**
संरक्षित वन	**वन विभाग द्वारा घोषित — आगे किसी क्षरण से सुरक्षित**
अवर्गीकृत वन	**सरकार और निजी व्यक्तियों व समुदायों दोनों के वन और बंजर भूमि**
जैव विविधता	**किसी क्षेत्र में पाए जाने वाले सभी पौधों, जानवरों और सूक्ष्म-जीवों की विविधता**
पवित्र वन	**समुदाय द्वारा धार्मिक आस्था से पूर्णतः अछूते छोड़े गए वन के टुकड़े**

स्तम्भ	सही उत्तर (स्तम्भ)
	1988 से सरकार और ग्राम समुदायों का वन प्रबंधन में संयुक्त साझेदारी
प्रोजेक्ट टाइगर	**बाघों की संख्या 1,827 रह जाने पर 1973 में शुरू किया गया अभियान**
चिपको आन्दोलन	**हिमालय में पेड़ों को गले लगाकर कटाई रोकने का आन्दोलन**
बीज बचाओ आन्दोलन	**टिहरी में पारंपरिक बीज और जैविक खेती को बढ़ावा देने का आन्दोलन**
कीस्टोन प्रजाति	**जिसकी उपस्थिति पूरे पारिस्थितिकी तंत्र को स्वस्थ बनाए रखती है**

खण्ड ४ — अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न () — १० प्रश्न

शिक्षक की सलाह: ये वे प्रश्न हैं जो छात्र मुझसे कक्षा में सबसे अधिक पूछते हैं। हर उत्तर ध्यान से पढ़ो — ये सबसे सामान्य भ्रमों को दूर करते हैं!

प्र.1. 'कीस्टोन प्रजाति' क्या होती है? बाघ को यह क्यों कहते हैं?

उत्तर: कीस्टोन प्रजाति वह होती है जो अपने पारिस्थितिकी तंत्र के लिए इतनी महत्त्वपूर्ण होती है कि उसे हटाने से पूरा तंत्र ध्वस्त हो जाता है — ठीक उसी तरह जैसे किसी मेहराब से मुख्य पत्थर निकालने पर वह गिर जाती है।

बाघ को इसलिए कीस्टोन प्रजाति कहते हैं क्योंकि वह खाद्य शृंखला के शीर्ष पर है। स्वस्थ बाघ = संतुलित शिकार जानवर = समृद्ध वनस्पति = स्वस्थ पूरा वन।

सरल सूत्र: बाघ नहीं = बीमार वन। स्वस्थ बाघ = स्वस्थ वन।

प्र.2. राष्ट्रीय उद्यान, वन्यजीव अभयारण्य और बाघ आरक्षित क्षेत्र में क्या अंतर है?

उत्तर: राष्ट्रीय उद्यान: सबसे कड़ा संरक्षण। अंदर कोई मानवीय गतिविधि (चराई भी) वर्जित। सीमा कानून से निश्चित।

वन्यजीव अभयारण्य: थोड़ा लचीला। कुछ मानवीय गतिविधियाँ (जैसे चराई) संभव। विशेष वन्य जीवों की सुरक्षा पर ध्यान।

बाघ आरक्षित क्षेत्र: प्रोजेक्ट टाइगर के अंतर्गत विशेष रूप से बाघ संरक्षण के लिए। इसमें मुख्य क्षेत्र (कड़ी सुरक्षा) और बफर क्षेत्र (कुछ मानवीय गतिविधि) शामिल होते हैं।

प्र.3. यदि हम वनों का सीधे उपयोग नहीं करते तो भी उन्हें बचाना क्यों ज़रूरी है?

उत्तर: वन चुपचाप पृष्ठभूमि में विशाल काम करते हैं जो हर इंसान को प्रभावित करता है।

वे हमारी साँस की हवा 2 सोखकर और ऑक्सीजन देकर शुद्ध करते हैं। हमारे भोजन को उगाने वाली वर्षा को नियंत्रित करते हैं। मिट्टी पकड़कर बाढ़ रोकते हैं। भूजल बनाए रखते हैं। हज़ारों प्रजातियों को आश्रय देते हैं।

शहर में रहने वाला भी जो पानी पीता है, जो अनाज खाता है और जो हवा साँस लेता है — वह सब किसी न किसी वन से प्रभावित है। वन वैकल्पिक नहीं — अनिवार्य हैं।

प्र.4. 1900 से 1973 के बीच भारत में बाघों की संख्या का क्या हुआ?

उत्तर: 20वीं शताब्दी के आरम्भ में भारत में लगभग 55,000 बाघ थे। 1973 तक मात्र 1,827 बचे — सात दशकों में 96% से अधिक की गिरावट।

कारण: शिकार, आवास हानि, शिकार-आधार में कमी, मानव आबादी का वनों में घुसाव और पारंपरिक एशियाई दवाइयों में बाघ के अंगों की माँग।

स्थिति इतनी गंभीर थी कि 1973 में प्रोजेक्ट टाइगर शुरू हुआ — जो विश्व के सबसे प्रसिद्ध संरक्षण अभियानों में से एक बना।

प्र.5. चिपको आन्दोलन क्या था और आज भी यह क्यों प्रासंगिक है?

उत्तर: चिपको आन्दोलन हिमालयी क्षेत्र में शुरू हुआ जहाँ स्थानीय समुदाय — मुख्यतः महिलाएँ — पेड़ों को गले लगाकर (चिपको = चिपकना) ठेकेदारों को उन्हें काटने से रोकती थीं।

इसने सिद्ध किया कि संगठित समुदाय बिना सरकारी सहायता के भी बड़े पैमाने पर पर्यावरण विनाश रोक सकते हैं।

आज भी यह प्रासंगिक है क्योंकि वनों की कटाई वैश्विक समस्या बनी हुई है। चिपको आन्दोलन दर्शाता है कि आम लोग मिलकर अपने प्राकृतिक वातावरण की रक्षा कर सकते हैं।

प्र.6. पवित्र वन क्या हैं और इन्होंने संरक्षण में कैसे सहायता की है?

उत्तर: पवित्र वन — देव वन, देवराई, सरना आदि नामों से जाने जाते हैं — वन के वे टुकड़े हैं जिन्हें समुदाय धार्मिक आस्था से पूर्णतः अछूता छोड़ता है।

यहाँ कोई कटाई, शिकार या हस्तक्षेप नहीं होता। ये दुर्लभ पौधों, औषधीय जड़ी-बूटियों और जानवरों के लिए सदियों से सुरक्षित आश्रय बने हैं।

ये साबित करते हैं कि सांस्कृतिक और आध्यात्मिक आस्थाएँ जैव विविधता की रक्षा में कानून से भी अधिक टिकाऊ हो सकती हैं।

प्र.7. क्या है और स्थानीय समुदायों को इससे क्या लाभ होता है?

उत्तर: (संयुक्त वन प्रबंधन) सरकार के वन विभाग और स्थानीय ग्राम समुदायों की साझेदारी में निम्नीकृत वन भूमि के प्रबंधन का कार्यक्रम है।

समुदाय वन की रक्षा करता है और बदले में गैर-इमारती वन उत्पाद (फल, पत्तियाँ, फूल आदि) और सफल संरक्षण के बाद इमारती लकड़ी का हिस्सा प्राप्त करता है।

लाभ: नियमित वन संसाधन, आर्थिक आय, और उस वन के प्रबंधन में वास्तविक भूमिका जिस पर समुदाय निर्भर है। 1988 से ओडिशा से शुरू।

प्र.8. भारत और नेपाल को वन्य जीव शिकार के "प्रमुख निशाने" क्यों माना जाता है?

उत्तर: भारत और नेपाल मिलकर विश्व के जीवित बाघों का लगभग दो-तिहाई हिस्सा आश्रय देते हैं।

अवैध व्यापारी इन देशों को विशेष रूप से निशाना बनाते हैं क्योंकि काले बाज़ार में बाघ की खाल, हड्डियाँ और अन्य अंगों की — विशेषकर कुछ एशियाई देशों में पारंपरिक दवाइयों के लिए — भारी माँग है।

इसीलिए दोनों देशों को कड़े शिकार-विरोधी उपाय करने पड़ते हैं।

प्र.9. पाठ्यपुस्तक में "जीवन-पोषण प्रणाली" से क्या अभिप्राय है?

उत्तर: "जीवन-पोषण प्रणाली" का अर्थ है वे मूलभूत प्राकृतिक प्रक्रियाएँ जो पृथ्वी पर जीवन को संभव बनाती हैं — स्वच्छ जल, स्वच्छ वायु और उपजाऊ मृदा।

वन वर्षा और नदियों को नियंत्रित करते हैं (जल), 2 सोखकर ऑक्सीजन देते हैं (वायु), और अपरदन रोककर मिट्टी बचाते हैं (मृदा)।

इन प्रणालियों के बिना खेती असंभव, पीने का पानी गायब और साँस लेना कठिन हो जाएगा। वन संरक्षण इसीलिए मानव अस्तित्व का प्रश्न है।

प्र.10. सामुदायिक संरक्षण और सरकारी संरक्षण में क्या अंतर है?

उत्तर: सरकारी संरक्षण कानून, राष्ट्रीय उद्यानों, वन्यजीव अभयारण्यों और प्रवर्तन अधिकारियों के माध्यम से काम करता है — यह ऊपर से नीचे का दृष्टिकोण है।

सामुदायिक संरक्षण नीचे से ऊपर का दृष्टिकोण है — स्थानीय लोग बिना सरकारी निर्देश के स्वेच्छा से अपना पर्यावरण बचाते हैं। उदाहरण: पवित्र वन, चिपको, भैरोंदेव डाकव सोंचुरी।

का संदेश: सर्वोत्तम संरक्षण तब होता है जब स्थानीय समुदायों को निर्णय-लेने में वास्तविक केन्द्रीय स्थान मिले — न कि केवल सलाहकार की भूमिका।

खण्ड ५ — लघु उत्तरीय प्रश्न — ३० प्रश्न

शिक्षक की सलाह: प्रत्येक उत्तर २-४ वाक्यों में होना चाहिए। अपने शब्दों में लिखो, लेकिन मुख्य तथ्य सही होने चाहिए। गुणवत्ता लम्बाई से अधिक महत्त्वपूर्ण है!

प्र.1. जैव विविधता क्या है?

जैव विविधता () किसी क्षेत्र में पाए जाने वाले सभी जीवित प्राणियों — पौधों, जानवरों और सूक्ष्म-जीवों — की विविधता को कहते हैं। इसमें प्रजातियों के रूप, कार्य और परस्पर निर्भरता के जटिल जाल शामिल हैं। भारत जैव विविधता की दृष्टि से विश्व के सबसे समृद्ध देशों में से एक है।

प्र.2. भारत को "जैव विविधता-समृद्ध" देश क्यों कहते हैं?

भारत में पौधों और जानवरों की अत्यंत विशाल विविधता है। वास्तविक प्रजातियों की संख्या, अभी तक दर्ज की गई संख्या से दो से तीन गुना अधिक हो सकती है। यह विशाल विविधता भारत को पारिस्थितिक दृष्टि से विश्व के सबसे महत्त्वपूर्ण देशों में से एक बनाती है।

प्र.3. 1972 का भारतीय वन्य जीव (संरक्षण) अधिनियम क्या है?

यह एक ऐतिहासिक कानून है जो भारत के वन्य जीवों की रक्षा के लिए बना। इसमें संरक्षित प्रजातियों की अखिल भारतीय सूची बनाई गई, शिकार और अवैध व्यापार पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया गया, राष्ट्रीय उद्यान और वन्यजीव अभयारण्य स्थापित किए गए तथा सरकार को विशेष संरक्षण परियोजनाएँ घोषित करने का अधिकार दिया गया।

प्र.4. प्रोजेक्ट टाइगर क्या है और यह कब शुरू हुआ?

प्रोजेक्ट टाइगर विश्व के सबसे प्रसिद्ध वन्य जीव संरक्षण अभियानों में से एक है। यह 1973 में तब शुरू हुआ जब भारत में बाघों की संख्या 55,000 से घटकर मात्र 1,827 रह गई। इसका उद्देश्य केवल बाघ बचाना नहीं, बल्कि पूरे वन पारिस्थितिकी तंत्र की रक्षा करना था।

प्र.5. भारतीय कानून के अंतर्गत पाँच संरक्षित जानवरों के नाम बताइए।

निम्नलिखित जानवर कानूनी संरक्षण में हैं: बाघ, एक सींग वाला गैंडा, कश्मीरी बारहसिंगा (हंगुल), घड़ियाल, एशियाई शेर, भारतीय हाथी, काला हिरण (चिंकारा), गोडावण (ग्रेट इंडियन बस्टर्ड) और हिम तेंदुआ।

प्र.6. आरक्षित वन क्या हैं?

आरक्षित वन भारत की कुल वन भूमि के आधे से अधिक भाग को कवर करते हैं। ये वन और वन्य जीव संरक्षण के लिए सर्वाधिक मूल्यवान श्रेणी हैं। इनसे लकड़ी और वन उत्पाद भी कठोर प्रबंधन के अंतर्गत प्राप्त किए जाते हैं।

प्र.7. संरक्षित वन क्या हैं?

संरक्षित वन भारत की कुल वन भूमि के लगभग एक-तिहाई भाग को कवर करते हैं। इन्हें वन विभाग घोषित करता है। एक बार घोषित होने के बाद इन वनों में किसी भी प्रकार का और क्षरण प्रतिबंधित हो जाता है।

प्र.8. अवर्गीकृत वन क्या हैं?

अवर्गीकृत वन वे सभी वन और बंजर भूमि हैं जो आरक्षित या संरक्षित श्रेणी में नहीं आते। ये सरकार, निजी व्यक्तियों या समुदायों — किसी के भी हो सकते हैं। पूर्वोत्तर के कई राज्यों और गुजरात के कुछ हिस्सों में इनका अनुपात अधिक है।

प्र.9. चपिको आन्दोलन क्या है?

चपिको आन्दोलन हमिालयी क्षेत्र का एक सामुदायकि पर्यावरण आन्दोलन था, जसिमें स्थानीय लोगों — वशिषकर महलिाओं — ने पेड़ों को गले लगाकर ठेकेदारों द्वारा उन्हें काटने से रोका। इसने कई क्षेत्रों में वनों की कटाई सफलतापूर्वक रोकी और सद्धि कयिा कि संगठति समुदाय वनों की रक्षा कर सकते हैं।

प्र.10. बीज बचाओ आन्दोलन क्या है?

बीज बचाओ आन्दोलन उत्तराखण्ड के टहिरी और नवदान्या में शुरू हुआ। इसने सद्धि कयिा कि कृत्रमि रसायनों के बनिा ववििधि फसलें उगाई जा सकती हैं, पारंपरकि जैवकि खेती पर्यावरण के अनुकूल और आर्थकि रूप से व्यवहार्य है।

प्र.11. भैरोंदेव डाकव सोंचुरी क्या है?

यह राजस्थान के अलवर जलि का एक सामुदायकि संरक्षति वन है। पाँच गाँवों के लोगों ने 1,200 हेक्टेयर जंगल को अपना घोषति कर दयिा, अपने नयिम बनाए, शकिार पर पाबंदी लगाई और बनिा कसिी सरकारी सहायता के वन्य जीवों की रक्षा कर रहे हैं।

प्र.12. संयुक्त वन प्रबंधन () क्या है?

एक कार्यक्रम है जसिमें सरकार का वन वभिाग और स्थानीय ग्राम समुदाय मलिकर नम्निीकृत वन भूमि का प्रबंधन और संरक्षण करते हैं। समुदाय गैर-इमारती वन उत्पाद और इमारती लकड़ी का हस्सिा प्राप्त करता है। यह 1988 से ओडशिा से शुरू होकर औपचारकि रूप से चल रहा है।

प्र.13. पवत्रि वन ( ) क्या हैं?

पवत्रि वन वन के वे टुकड़े हैं जन्हिें स्थानीय समुदाय धार्मकि आस्था के कारण पूर्णतः अछूता छोड़ देते हैं। यहाँ कोई कटाई, शकिार या हस्तक्षेप नहीं होता। ये दुर्लभ पौधों और जानवरों के प्राकृतकि आश्रय हैं और भारत के अनेक क्षेत्रों में पाए जाते हैं।

प्र.14. भारत के कन्हिीं दो बाघ आरक्षति क्षेत्रों का उल्लेख उनके राज्यों सहति कीजए।

कॉर्बेट राष्ट्रीय उद्यान (उत्तराखण्ड) और सुंदरवन राष्ट्रीय उद्यान (पश्चमि बंगाल) दो प्रसद्धि बाघ आरक्षति क्षेत्र हैं। अन्य हैं — बाँधवगढ़ (मध्य प्रदेश), सरस्कि (राजस्थान), मानस (असम) और पेरयिार (केरल)।

प्र.15. वन संरक्षण कृषि और मत्स्य उद्योग को कैसे लाभ देता है?

वन संरक्षण पौधों और जानवरों की आनुवंशकि ववििधिता को बचाता है, जसिसे बेहतर फसल कस्मिें वकिसति होती हैं — यह खाद्य सुरक्षा के लए ज़रूरी है। मत्स्य उद्योग जलीय जैव ववििधिता पर नर्भिर है, और वन नदयिों और नालों की गुणवत्ता बनाए रखकर इस ववििधिता को सहारा देते हैं।

प्र.16. बाघ को "कीस्टोन प्रजाति" क्यों कहते हैं?

कीस्टोन प्रजाति वह होती है जसिे हटाने से पूरा पारस्थितिकिी तंत्र नष्ट हो जाता है। बाघ खाद्य शृंखला के शीर्ष पर है। इसकी उपस्थति यिह सुनश्चिति करती है कि शकिार जानवरों की संख्या संतुलति रहे और वनस्पति स्वस्थ बनी रहे।

प्र.17. वन जल की गुणवत्ता बनाए रखने में क्या भूमकिा नभिाते हैं?

वन प्राकृतकि जल फ़लि्टर की तरह काम करते हैं। पेड़ों की जड़ें मट्टिी को बाँधे रखती हैं, जसिसे वह नदयिों में नहीं बहती। वन वर्षा जल को धीरे-धीरे सोखते हैं, भूजल भंडार को भरते हैं और बाढ़ रोकते हैं।

प्र.18. पाठ्यपुस्तक में "जीवन-पोषण प्रणाली" से क्या तात्पर्य है?

जीवन-पोषण प्रणाली का अर्थ है वे मूलभूत प्राकृतिक प्रक्रियाएँ जो पृथ्वी पर जीवन को संभव बनाती हैं — स्वच्छ जल, स्वच्छ वायु और उपजाऊ मृदा। वन वर्षा नियंत्रित करते हैं, 2 अवशोषित करके वायु शुद्ध करते हैं और मृदा अपरदन रोकते हैं।

प्र.19. भारत में पारंपरिक संरक्षण का एक उदाहरण दीजिए।

राजस्थान के बिश्नोई समुदाय काले हिरण, नीलगाय और मोर को पवित्र मानते हैं और शताब्दियों से उनकी रक्षा करते आ रहे हैं — किसी भी वन्य जीव कानून से बहुत पहले से। यह सांस्कृतिक संरक्षण का एक श्रेष्ठ उदाहरण है।

प्र.20. भारत और नेपाल को शिकारियों का "प्रमुख निशाना" क्यों माना जाता है?

भारत और नेपाल मिलकर विश्व के जीवित बाघों का लगभग दो-तिहाई हिस्सा आश्रय देते हैं। अवैध शिकारी और व्यापारी इन देशों को विशेष रूप से निशाना बनाते हैं क्योंकि काले बाज़ार में बाघ की खाल और हड्डियों की भारी माँग है।

प्र.21. सरिस्का बाघ आरक्षित क्षेत्र का उदाहरण क्यों महत्त्वपूर्ण है?

राजस्थान के सरिस्का में ग्रामीणों ने वन्यजीव संरक्षण अधिनियम का हवाला देकर अवैध खनन के विरुद्ध लड़ाई लड़ी। यह इस बात का शक्तिशाली उदाहरण है कि समुदाय कानूनी हथियारों का उपयोग करके अपने प्राकृतिक वातावरण की रक्षा कर सकते हैं।

प्र.22. राज्य सरकारों ने वन संरक्षण में क्या योगदान दिया है?

1972 के अधिनियम के अंतर्गत राज्य सरकारों ने राष्ट्रीय उद्यान और वन्यजीव अभयारण्य स्थापित किए। वे कार्यक्रमों में भागीदारी करती हैं, सामुदायिक संरक्षण को समर्थन देती हैं और अपने क्षेत्र के वन विभागों के माध्यम से आरक्षित और संरक्षित वनों की रक्षा करती हैं।

प्र.23. भावी पीढ़ियों के लिए आनुवंशिक विविधता का क्या महत्त्व है?

आनुवंशिक विविधता विकास, नई दवाइयों और बेहतर फसल किस्मों के विकास का आधार है। यदि कोई प्रजाति लुप्त हो जाए तो उसके अद्वितीय जीन हमेशा के लिए खो जाते हैं। इसलिए संरक्षण भावी पीढ़ियों की वैज्ञानिक, कृषि और चिकित्सा सम्भावनाओं की रक्षा करता है।

प्र.24. प्रकृति पूजा भारत में संरक्षण में कैसे सहायक होती है?

भारत में कई समुदाय विशेष पेड़ों, जानवरों और प्राकृतिक स्थलों की पूजा करते हैं, जिससे वे स्वेच्छा से उनकी रक्षा करते हैं। पवित्र वन, जो "देवताओं के जंगल" के रूप में संरक्षित हैं, सदियों से जैव विविधता को बिना किसी सरकारी हस्तक्षेप के बचाए हुए हैं।

प्र.25. भारतीय कानून के अंतर्गत संरक्षित तीन घड़ियाल () प्रजातियों के नाम बताइए।

भारत में तीन प्रकार के घड़ियाल कानूनी संरक्षण में हैं: मीठे पानी का मगरमच्छ ( ), खारे पानी का मगरमच्छ ( ) और घड़ियाल ()। तीनों संकटग्रस्त हैं।

प्र.26. अध्याय में पारिस्थितिकि खेती के बारे में क्या कहा गया है?

अध्याय में बताया गया है कि पारंपरिक संरक्षण और पारिस्थितिकि खेती को पुनः अपनाने के प्रयास अब व्यापक हो रहे हैं। बीज बचाओ आन्दोलन और नवदान्या ने सिद्ध किया कि कृत्रिम रसायनों के बिना विविध फसलें उगाना संभव और आर्थिक रूप से व्यवहार्य है।

प्र.27. मध्य प्रदेश वन संरक्षण में अग्रणी राज्य क्यों है?

मध्य प्रदेश में भारत के सभी राज्यों में आरक्षित वनों के अंतर्गत सर्वाधिक क्षेत्रफल है — इसकी कुल वन भूमि का 75% आरक्षित वनों में है। यह इसे भारत के सबसे अधिक वन-आच्छादित और पारिस्थितिक रूप से महत्त्वपूर्ण राज्यों में से एक बनाता है।

प्र.28. के इतिहास में ओडिशा की क्या भूमिका है?

ओडिशा ने 1988 में के लिए पहला राज्य प्रस्ताव पारित किया, जिससे इस ऐतिहासिक कार्यक्रम की औपचारिक शुरुआत हुई। इस अग्रणी कदम ने अन्य राज्यों के लिए सामुदायिक वन प्रबंधन का मार्ग दिखाया।

प्र.29. गौतम बुद्ध का वृक्षों के बारे में उद्धरण हमें क्या सिखाता है?

गौतम बुद्ध (487 ई.पू.) ने वृक्षों को "असीम दयालुता और उदारता का जीव" बताया जो उन्हें काटने वालों को भी छाया देता है। यह उद्धरण हमें सिखाता है कि वृक्षों का महत्त्व प्राचीन काल से जाना जाता था और हमारी नैतिक ज़िम्मेदारी है कि हम उन्हें नष्ट न करें।

प्र.30. अध्याय से सामुदायिक संरक्षण की मुख्य सीख क्या है?

मुख्य सीख यह है कि स्थानीय समुदायों को प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन में वास्तविक और केन्द्रीय भूमिका दी जानी चाहिए — न कि मात्र दर्शक के रूप में रखा जाए। जो संरक्षण समुदाय को सशक्त बनाता है, वही दीर्घकाल तक टिकाऊ होता है।

खण्ड ६ — दीर्घ उत्तरीय प्रश्न — १० प्रश्न

शिक्षक की सलाह: प्रत्येक दीर्घ उत्तर १००-१५० शब्दों में लिखो। स्पष्ट अनुच्छेद बनाओ, अध्याय के उदाहरण दो और हमेशा निष्कर्ष लिखो। संरचना = अंक!

प्र.1. जैव विविधता क्या है? मानव जीवन के लिए यह क्यों महत्त्वपूर्ण है? कम से कम चार कारण दीजिए।

जैव विविधता () किसी क्षेत्र में पाए जाने वाले सभी जीवित प्राणियों — पौधों, जानवरों, जीवाणुओं और सूक्ष्म-जीवों — की विविधता है। भारत विश्व के जैव विविधता के दृष्टिकोण से सबसे समृद्ध देशों में से एक है।

महत्त्व के कारण:

1. पारिस्थितिक संतुलन: प्रत्येक प्रजाति की एक भूमिका है। एक प्रजाति के लुप्त होने से पूरी शृंखला प्रभावित होती है — जैसे मधुमक्खियाँ न रहें तो परागण रुक जाए और फसलें नष्ट हों।

2. खाद्य सुरक्षा: अधिक जैव विविधता = अधिक फसल किस्में। एक फसल विफल होने पर अन्य खाद्य आपूर्ति बनाए रख सकती हैं।

3. दवाइयाँ: अनेक जीवनरक्षक दवाएँ पौधों और जानवरों से आती हैं। अधिक जैव विविधता = अधिक भविष्य की औषधीय खोजों की सम्भावना।

4. जीवन-पोषण प्रणाली: जैव विविधता स्वच्छ जल, स्वच्छ वायु और उपजाऊ मृदा बनाए रखती है।

5. सांस्कृतिक मूल्य: अनेक समुदाय अपनी सांस्कृतिक पहचान, आध्यात्मिक जीवन और आजीविका स्थानीय जैव विविधता से जोड़ते हैं।

निष्कर्ष: जैव विविधता विलासिता नहीं — यह वह नींव है जिस पर समस्त मानव जीवन टिका है।

प्र.2. 1972 के भारतीय वन्य जीव (संरक्षण) अधिनियम का वर्णन कीजिए। इसके मुख्य प्रावधान क्या थे और यह किन जानवरों की रक्षा करता है?

1972 का भारतीय वन्य जीव (संरक्षण) अधिनियम एक ऐतिहासिक कानून था जो 1960 और 70 के दशक में संरक्षणवादियों की माँगों के जवाब में बना, जब वन्य जीवों और वनों की तेज़ी से घटती संख्या चिंताजनक हो गई थी।

मुख्य प्रावधान:

- संरक्षित प्रजातियों की अखिल भारतीय सूची प्रकाशित की गई।

- किसी भी संरक्षित प्रजाति के शिकार, पकड़ने और व्यापार पर पूर्ण प्रतिबंध।

- केंद्र और राज्य सरकारें राष्ट्रीय उद्यान और वन्यजीव अभयारण्य स्थापित कर सकती हैं।

- सरकार गंभीर रूप से संकटग्रस्त प्रजातियों के लिए विशेष संरक्षण परियोजनाएँ घोषित कर सकती है।

संरक्षित जानवर: बाघ, एक सींग वाला गैंडा, कश्मीरी बारहसिंगा (हंगुल), मीठे/खारे पानी का मगरमच्छ, घड़ियाल, एशियाई शेर, भारतीय हाथी, काला हिरण, गोडावण और हिम तेंदुआ।

महत्त्व: इस अधिनियम ने भारत का दृष्टिकोण बदला — वन्य जीव संसाधन नहीं, राष्ट्रीय धरोहर हैं।

प्र.3. प्रोजेक्ट टाइगर का विस्तार से वर्णन कीजिए। बाघों की संख्या क्यों घटी? इस कार्यक्रम का क्या महत्त्व है?

प्रोजेक्ट टाइगर विश्व के सबसे प्रसिद्ध वन्य जीव संरक्षण अभियानों में से एक है। यह 1973 में एक गंभीर पारिस्थितिकी संकट की प्रतिक्रिया में शुरू हुआ।

संकट: 20वीं शताब्दी के आरम्भ में भारत में अनुमानित 55,000 बाघ थे। 1973 तक यह संख्या मात्र 1,827 रह गई — सात दशकों में 96% की भयावह गिरावट।

गिरावट के कारण:

- शिकार: बाघ की खाल और हड्डियाँ अंतरराष्ट्रीय काले बाज़ार में बेची जाती थीं।

- आवास हानि: खेती, बस्तियों और विकास के लिए वन काटे गए।

- शिकार-आधार में कमी: हिरण, जंगली सुअर आदि शिकार जानवर भी कम हो गए।

- मानव जनसंख्या वृद्धि: लोग वन क्षेत्रों में घुसते गए।

- पारंपरिक दवाइयाँ: एशियाई देशों में बाघ के अंगों की भारी माँग थी।

महत्त्व: प्रोजेक्ट टाइगर ने बाघ आरक्षित क्षेत्रों का जाल बुना, बाघ को विनाश के कगार से बचाया, पूरे वन पारिस्थितिकी तंत्र की रक्षा की और विश्वभर में संरक्षण का आदर्श बना।

प्र.4. भारत में वनों की तीन श्रेणियों — आरक्षित, संरक्षित और अवर्गीकृत — का वर्णन उनकी विशेषताओं और राज्यों के उदाहरण सहित कीजिए।

भारत के वनों को सरकार द्वारा तीन मुख्य श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है:

1. आरक्षित वन: भारत की कुल वन भूमि के आधे से अधिक को कवर करते हैं और संरक्षण के लिए सर्वाधिक मूल्यवान श्रेणी हैं। इनसे कड़े प्रबंधन में लकड़ी भी ली जाती है। सर्वाधिक अनुपात वाले राज्य: मध्य प्रदेश (75%), जम्मू-कश्मीर, आंध्र प्रदेश, उत्तराखण्ड, केरल, तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल और महाराष्ट्र।

2. संरक्षित वन: कुल वन भूमि का लगभग एक-तिहाई। वन विभाग द्वारा घोषित — घोषणा के बाद कोई भी और क्षरण वर्जित। बिहार, हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, ओडिशा और राजस्थान में अधिक अनुपात।

3. अवर्गीकृत वन: अन्य सभी वन और बंजर भूमि। सरकार, निजी व्यक्तियों या समुदायों के हो सकते हैं। पूर्वोत्तर राज्यों और गुजरात में उच्च प्रतिशत, अक्सर स्थानीय समुदायों द्वारा प्रबंधित।

इन श्रेणियों को समझना ज़रूरी है क्योंकि प्रत्येक में अलग स्तर का कानूनी संरक्षण और प्रबंधन दृष्टिकोण है।

प्र.5. भारत में वन संरक्षण में सामुदायिक भागीदारी की भूमिका का वर्णन कीजिए। कम से कम चार उदाहरण दीजिए।

भारत में सामुदायिक भागीदारी वन संरक्षण के सबसे शक्तिशाली और सिद्ध उपकरणों में से एक है। यहाँ चार विस्तृत उदाहरण हैं:

1. चिपको आन्दोलन (हिमालय): स्थानीय लोगों — विशेषकर महिलाओं — ने पेड़ों को गले लगाकर ठेकेदारों से बचाया। इसने कई हिमालयी क्षेत्रों में वनों की कटाई रोकी और सामुदायिक पर्यावरण आन्दोलन का वैश्विक प्रतीक बना।

2. बीज बचाओ आन्दोलन (टिहरी, उत्तराखण्ड): किसानों ने पारंपरिक बीज किस्में जीवित रखीं और सिद्ध किया कि रासायनिक खेती के बिना भी विविध और उत्पादक खेती संभव है।

3. भैरोंदेव डाकव सोंचुरी (अलवर, राजस्थान): पाँच गाँवों ने 1,200 हेक्टेयर वन को अपना घोषित किया, शिकार पर पाबंदी लगाई और बिना किसी सरकारी सहायता के वन्य जीवों की रक्षा कर रहे हैं।

4. सरिस्का बाघ आरक्षित (राजस्थान): ग्रामीणों ने वन्यजीव संरक्षण अधिनियम का उपयोग करके अवैध खनन रोका — यह दर्शाता है कि समुदाय कानूनी हथियारों से भी पर्यावरण बचा सकते हैं।

निष्कर्ष: ये उदाहरण सिद्ध करते हैं कि स्थानीय समुदाय, जब सशक्त हों, तो सरकारी एजेंसियों से भी अधिक प्रभावी संरक्षक बन सकते हैं।

प्र.6. पवित्र वन क्या हैं? भारत में जैव विविधता संरक्षण में इन्होंने कैसे योगदान दिया है? विभिन्न समुदायों के उदाहरण दीजिए।

पवित्र वन — जिन्हें देव वन, देवराई, सरना आदि नामों से जाना जाता है — वन के वे टुकड़े हैं जिन्हें स्थानीय समुदाय धार्मिक श्रद्धा के कारण पूर्णतः अछूता छोड़ते हैं।

संरक्षण में योगदान:

- पीढ़ियों तक, कभी-कभी शताब्दियों तक, अविक्षुब्ध पारिस्थितिकी तंत्र को जीवित रखते हैं।

- उन दुर्लभ पौधों, औषधीय जड़ी-बूटियों और जानवरों के लिए आश्रय जो आसपास की भूमि से गायब हो चुके हैं।

- बिना किसी सरकारी प्रवर्तन के स्वेच्छा से बनाए जाते हैं — इसलिए अत्यंत टिकाऊ।

विभिन्न समुदायों के उदाहरण:

- छोटा नागपुर के मुंडा और संथाल: महुआ ( ) और कदम्ब को पवित्र मानते हैं।

- ओडिशा और बिहार की जनजातियाँ: इमली के पेड़ को पवित्र मानती हैं।

- सम्पूर्ण भारतीय समाज: विवाहों में आम के पेड़ लगाए जाते हैं; मन्दिरों के पास पीपल और बरगद नहीं काटे जाते।

- राजस्थान के बिश्नोई: काला हिरण, नीलगाय और मोर को समुदाय का अंग मानते हुए प्रतिदिन खिलाते और उनकी रक्षा करते हैं।

निष्कर्ष: पवित्र वन सिद्ध करते हैं कि सांस्कृतिक आस्थाएँ जैव विविधता को कानून से भी अधिक प्रभावी ढंग से बचा सकती हैं।

प्र.7. संयुक्त वन प्रबंधन () क्या है? यह कैसे काम करता है? स्थानीय समुदायों को इससे क्या लाभ होता है?

संयुक्त वन प्रबंधन () एक कार्यक्रम है जिसमें सरकार का वन विभाग और स्थानीय ग्राम समुदाय साझेदारी में निम्नीकृत वन भूमि की रक्षा और प्रबंधन करते हैं।

इतिहास: 1988 से औपचारिक रूप में है जब ओडिशा ने इसके लिए पहला राज्य प्रस्ताव पारित किया। तब से कई अन्य राज्यों ने भी इसे अपनाया।

कार्यप्रणाली: स्थानीय ग्राम-स्तरीय संस्थाएँ एक निर्दिष्ट निम्नीकृत वन भूमि की रक्षा की ज़िम्मेदारी लेती हैं। वे अवैध कटाई रोकती हैं और अतिक्रमण की रिपोर्ट करती हैं।

समुदाय को क्या मिलता है:

- गैर-इमारती वन उत्पाद (): फल, पत्तियाँ, फूल, चारा और औषधीय पौधे।

- सफल संरक्षण के बाद इमारती लकड़ी का हिस्सा।

समुदाय को लाभ:

- वन संसाधनों से नियमित आय।

- जिस वन पर निर्भर हैं उसके प्रबंधन में औपचारिक भूमिका।

- वन गुणवत्ता में दीर्घकालिक सुधार।

ज़िम्मेदारी और पुरस्कार दोनों साझा करने का उत्कृष्ट उदाहरण है।

प्र.8. मानवीय गतिविधियों ने भारत में वनों और वन्य जीवों की कमी को कैसे प्रभावित किया है?

मानवीय गतिविधियों ने भारत के वनों और वन्य जीवों को भारी और अक्सर अपूरणीय क्षति पहुँचाई है:

1. वनों की कटाई: खेती, नगरीकरण, उद्योग और बुनियादी ढाँचे के लिए विशाल वन क्षेत्र साफ किए गए — जो अनगिनत प्रजातियों के आवास नष्ट करता है।

2. शिकार और अवैध व्यापार: बाघ, गैंडा, हाथी, तेंदुआ आदि का अवैध शिकार जारी है। वैश्विक अवैध वन्य जीव व्यापार अरबों का है।

3. प्रदूषण: औद्योगिक रसायन, कृषि कीटनाशक और प्लास्टिक कचरे ने अनेक आवासों को विषाक्त बना दिया।

4. खनन: वन क्षेत्रों में खनिज निष्कर्षण स्थायी रूप से आवास नष्ट करता है।

5. नगरीकरण: बढ़ते शहर वन भूमि निगलते हैं और आवासों को विखण्डित करते हैं।

6. विदेशी प्रजातियों का आगमन: जानबूझकर या गलती से लाई गई विदेशी प्रजातियाँ देशी प्रजातियों को हटा देती हैं।

7. अत्यधिक दोहन: वन की पुनःपूर्ति से अधिक जलाऊ लकड़ी और औषधीय पौधों का संग्रह।

परिणाम: अनेक प्रजातियाँ संकटग्रस्त हैं, आवास विखण्डित हो गए हैं, पारिस्थितिकी तंत्र दबाव में हैं।

प्र.9. पर्यावरणीय विनाश और पुनर्निर्माण के उदाहरणों से अध्याय क्या सीख देता है?

यह अध्याय भारत की संरक्षण सफलताओं और विफलताओं से एक शक्तिशाली और स्पष्ट सीख देता है।

केन्द्रीय सीख: स्थानीय समुदायों को प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन में वास्तविक रूप से शामिल किया जाना चाहिए। उनके बिना संरक्षण न तो टिकाऊ है और न ही वास्तव में प्रभावी।

एक चेतावनी: अध्याय ईमानदारी से स्वीकार करता है कि अभी भी बहुत लम्बा रास्ता तय करना है। अक्सर समुदायों से निर्णय लेने के बाद सलाह ली जाती है — न कि उन्हें प्रमुख निर्णयकर्ता बनाया जाता है।

अच्छे संरक्षण की कसौटी: केवल वही गतिविधियाँ स्वीकार करो जो —

- जन-केन्द्रित हों (समुदाय को लाभ दें),

- पर्यावरण-मित्र हों (दीर्घकालिक क्षति न पहुँचाएँ),

- आर्थिक रूप से लाभकारी हों (वास्तविक और टिकाऊ आय दें)।

साक्ष्य: चिपको, बीज बचाओ आन्दोलन, सरिस्का ग्रामीण और भैरोंदेव डाकव सोंचुरी — सभी सिद्ध करते हैं कि समुदाय, जब वास्तव में सशक्त हों, संसाधनों का ज़िम्मेदारी से प्रबंधन कर सकते हैं।

छात्रों के लिए सन्देश: वन संरक्षण केवल विज्ञान या पर्यावरण का विषय नहीं — यह एक गहरा सामाजिक प्रश्न है कि साझा प्राकृतिक संसाधनों पर निर्णय का अधिकार किसे है।

प्र.10. टिकाऊ संरक्षण की अवधारणा क्या है? भारत विकास और संरक्षण में संतुलन कैसे बना सकता है?

टिकाऊ संरक्षण का अर्थ है प्राकृतिक संसाधनों का इस प्रकार उपयोग और संरक्षण जो वर्तमान पीढ़ी की ज़रूरतें पूरी करे और भावी पीढ़ियों की क्षमता से समझौता न करे।

अध्याय की सिफारिश: केवल वही आर्थिक या विकास गतिविधियाँ स्वीकार करो जो जन-केन्द्रित, पर्यावरण-मित्र और आर्थिक रूप से लाभकारी हों।

अध्याय की आलोचना: ऊपर से नीचे के संरक्षण की — जहाँ सरकार सब निर्णय करे और समुदाय बाहरी दर्शक रहे — यह मॉडल बार-बार विफल रहा है। वास्तविक स्थिरता के लिए समुदायों को केन्द्र में रखना ज़रूरी है।

संतुलन के उपाय:

1. का विस्तार: समुदायों को वन प्रबंधन और उसके आर्थिक लाभ में वास्तविक हिस्सेदारी।

2. पारिस्थितिक पर्यटन: वन्य जीवन और प्रकृति से स्थानीय आय, बिना पारिस्थितिकी को नुकसान पहुँचाए।

3. पारिस्थितिक खेती: बीज बचाओ आन्दोलन की तरह पारंपरिक जैविक खेती को बढ़ावा।

4. कानून का कड़ा पालन: शिकार, अवैध खनन और अतिक्रमण के विरुद्ध।

5. शिक्षा: यह अध्याय स्वयं इस समाधान का हिस्सा है।

अंतिम सन्देश: भारत के पास संस्कृति, सामुदायिक मॉडल और कानूनी उपकरण सब हैं। ज़रूरत है राजनीतिक इच्छाशक्ति की — ताकि स्थानीय समुदाय भारत की प्राकृतिक धरोहर के वास्तविक संरक्षक बन सकें।